Dainik Jagran (Suppl.: Jagran City)
(Hindi) (Dehradun)

EDII

February 13, 2025
Pg. IV

लाजिस्टिक्स व सप्लाई चेन मैनेजमेंट में दून विवि की भूमिका अहम

जागरण संवाददाता, देहरादून : दून विश्वविद्यालय लाजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में उत्कृष्टता केंद्र बनकर उभर रहा है। उत्तराखंड के उद्यमिता और अकादमिक क्षेत्र को सशक्त बनाने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम माना गया। दून विवि में उच्च शिक्षा विभाग और एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट आफ इंडिया (ईडीआइआइ) अहमदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय मेगा स्टार्टअप समिट 2025 आयोजित किया गया। जिसमें दून विवि को लाजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया। इस प्रतिष्ठित सम्मान को प्रदेश के शिक्षाविदों और कुलपतियों के एक उच्चस्तरीय पैनल ने प्रदान किया। इस सम्मान को दून विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव दुर्गेश डिमरी और देवभूमि उद्यमिता योजना के नोडल अधिकारी डा. सुधांशु जोशी ने ग्रहण किया।

दून विवि की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल इस उपलब्धि पर बताया कि लाजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट में नवाचार को बढ़ावा मिलेगा। दून विवि लाजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट के क्षेत्र में नवाचार, अनुसंधान और उद्यमिता विकास का प्रमुख केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। दून विवि अत्याधुनिक शोध, उद्योग भागीदारी और अकादमिक विशेषज्ञता का लाभ उठाकर लाजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट के प्रमुख चुनौतियों का समाधान कर रहा है। यह मान्यता दून विश्वविद्यालय को सप्लाई चेन इनोवेशन के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान के रूप में स्थापित करेगी, जिससे उभरते हुए उद्यमी और शोधकर्ता इस क्षेत्र में नए आयाम जोड़ सकेंगे और भारत में लाजिस्टिक्स और सप्लाई चेन मैनेजमेंट के विकास में योगदान दे सकेंगे।

दून विवि में आयोजित मेगा स्टार्टअप समिट के अंतिम दिन उच्च शिक्षा सचिव डा. रंजीत सिन्हा स्टाल के अवलोकन के दौरान बातचीत करते हुए ● साभार- विवि

बिच्छू घास से बनी चाय आकर्षण का केंद्र

डीएवी पीजी कालेज देहरादून की छात्रा साधना रतूड़ी का स्टार्टअप बिच्छू घास से बनी चाय आकर्षण का केंद्र बनी रही। साधना ने बताया कि उन्होंने स्टार्टअप के तहत बिच्छू घास से चाय, चटनी और आचार बनाने पर काम शुरू किया। बताया कि बिच्छू घास से बनी चाय को टी-बैग और पैकेट के रूप में बाजार में उपलब्ध कराया जाता है। यह चाय लेमन ग्रास, तुलसी आदि फ्लेवर में भी हैं।

अंकिता ने जंगली घास का किया बेहतरीन उपयोग

एमबीजीपी डिग्री कालेज नानकमत्ता (ऊधम सिंह नगर) की छात्रा अंकिता ने बताया कि गांव के आसपास जंगली घास मूंज बहुतायत में होती है। मैंने सोचा कि क्यों न इस घास का उपयोग किया जाए। मैंने फल टोकरी बनाई, जो लोग खूब खरीद रहे हैं। उनके स्टार्टअप से अन्य छात्र भी जुड़कर मूंज घास से फल की टोकरी बना रहे हैं। इनका मूल्य आकृति से अनुसार 100 रुपये से शुरू होकर 1,000 रुपये तक है। खास बात यह है कि यह जल्दी खराब नहीं होती हैं। उन्होंने ने बताया कि इसके अलावा उनके स्टार्टअप ने मोगरा, केसर, अश्वगंधा और फूलों के रस के मिश्रण से धूप भी बनाई है।

छात्रों के साथ माल्टा, बुरांश एकत्र करते हैं दीपक

राजकीय महाविद्यालय चौखुटिया (अल्मोड़ा) के छात्र दीपक सिंह नेगी ने अपने स्टार्टअप के बारे में बताया कि उनकी टीम पहाड़ों के फल और फूल से रेडी टू ड्रिंक उत्पाद बनाती हैं। वह अन्य छात्रों के साथ गांवों से माल्टा, बुरांश, आंवला, गिलोई आदि को एकत्र करते हैं और रेडी टू ड्रिंक जूस बनाते हैं। 250 एमएल के जूस का मूल्य 20 रुपये और 500 एमएल का मूल्य 40 रुपये रखा गया है। उन्होंने बताया कि उनकी टीम आनलाइन माध्यम से मंडुवा, झंगोरा और पहाड़ी दालों को भी बेचती है। ताकि कोई भी घर बैठे इन उत्पादों को मांगा सके। इसके किसानों को फायदा होता है।